Safe in India Foundation

प्रेस विज्ञप्ति

हाथ बढ़ायें, हाथ बचायें

क्रश 2020 संस्करण: यह रिपोर्ट गुड़गाँव और फरीदाबाद से ऑटो सैक्टर के 1800 से ज़्यादा चोटग्रस्त श्रमिकों के वास्तविक जीवन के अनुभवों पर आधारित है. ऑटो सैक्टर सप्लाई चेन में होने वाली दुर्घटनाओं में हज़ारों श्रमिक अपनी अंगुलियाँ, और कई मामलों में पूरे हाथ तक, खो बैठते हैं.

यह रिपोर्ट क्रश 2019 का अगला वार्षिक संस्करण है, जिसे अगस्त 2019 में तीन चरणों में श्रम मंत्रालय, भारतीय प्रबंधन संस्थान I. I. M. अहमदाबाद और चोटग्रस्त मज़दूरों के साथ गुड़गाँव में जारी किया गया था. क्रश 2019 के प्रैस कवरेज का लिंक यहाँ है
इसके निष्करषों को वाहन उद्योग और सरकार द्वारा स्वीकार किया गया.

सेफ इन इंडिया फाउंडेशन SII एक सामाजिक संगठन है जिसके के संस्थापक IIM अहमदाबाद 91 सत्र के तीन मित्र हैं. SII ने अपने कार्यकाल में अभी तक 2400 से ज़्यादा श्रमिकों को ESIC चिकित्सा सेवा और हितलाभ दिलवाने में मदद की है और उन्हें 18 करोड़ रुपये मूल्य के उनके दावों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान की है.

क्रश 2020 के मुख्य बिंदु रिपोर्ट सारांश के रूप में संलग्न हैं

1. पिछले तीन वर्षों में ऑटो कलपुर्जे बनाने वाले कारखानों में 1800 से ज़्यादा श्रमिक दुर्घटनाओं का शिकार हो कर गंभीर रूप से चोटग्रस्त हुए
2. चोटग्रस्त हुए श्रमिकों में अधिकांश 88% प्रवासी मज़दूर थे. कोविड-19 लॉक डाउन के दौरान भी सबसे ज़्यादा मुश्किलों का सामना इनको ही करना पड़ा.
3. इनमें से लगभग 65% अनुबंध पर काम कर रहे थे, जबकि इनमें से बहुत सारे श्रमिक पिछले कई वर्षों से इसी व्यवसाय से जुड़े हुए हैं.
4. इनमें से आधे से ज़्यादा, लगभग 52%, युवा थे जिनकी उम्र 30 वर्ष से कम थी
5. इनमें से 95% जिन कारखानों में काम करते थे वे मारुति सुजुकी, हीरो या हौंडा के लिये कलपुर्जे बनाते हैं

यह समस्या राष्ट्र व्यापी है और सभी ऑटो केंद्र एक समान सप्लाई चेन कमियों की वजह से इससे जूझ रहे हैं. गुड़गाँव-फरीदाबाद तक में 19% दुर्घटनायें अन्य कम्पनी जिसमें

Safe in India Foundation ("SII") provides free of charge assistance to injured workers, mostly in auto-sector supply chain, currently in Gurugram-Manesar, in their ESIC healthcare and claims. SII activities are funded by supporters and donors, mostly from IIM Ahmedabad and IIT Roorkee, concerned about the well-being and productivity of millions of Indian workers at risk. SII has no income expectations or commercial partnerships. The co-founders do not charge SII for their time and services.

अशोक लीलैंड, आइशर, एस्कॉर्ट्स, जेसीबी, महिंद्रा, टाटा, टीवीएस और यामाहा के सप्लाई चेन में दर्ज हुईं.

6. पावर प्रैस सबसे खतरनाक मशीन बनी हुई है, इसके उपयोग में अनेक कानून तोड़े जा रहे हैं. इस पर हुई दुर्गटनाओं का हिस्सा बढ़ कर 59% हो गया है
7. सुरक्षा कानून अपर्याप्त हैं और ठीक से लागू नहीं किये जाते. दुर्घटनाओं की सही सूचना न देना अभी भी जारी है
8. मारुति-सुजुकी ने कुछ सकारात्मक कदम उठाने शुरू किये हैं. SII के सुझावों पर हीरो और हौंडा की प्रतिक्रिया का अभी भी इंतज़ार है
9. केंद्र सरकार ने DG FASLI (केंद्र सरकार का सुरक्षा विभाग) के तहत एक अंतरिम समिति का गठन किया है और हरियाणा ने भी एक फैक्ट्री सुरक्षा समिति के गठन की घोषणा की है. इन दोनों के विवरण का इंतज़ार है. अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है, खासकर नया OSH कोड स्वीकार किये जाने की स्थिति में.

ये मात्र शुरुआत है, अभी बहुत लंबा फासला तय किया जाना बाकी है. इस दिशा में वाहन उद्योग को एक अग्रणी भूमिका निभाने की ज़रूरत है क्योंकि वही उन कलपुर्जों का उपयोग करते हैं जो ये श्रमिक बनाते हैं. यह एक राष्ट्रीय मुद्दा है क्योंकि

- ये ऑटो ब्रैंड राष्ट्रीय हैं, देश भर में अपने उत्पाद बेचते हैं और उनका निर्यात भी करते हैं.
- नैशनल गाइडलाइंस ऑफ रिस्पांसिबिल बिज़नैस कंडक्ट (NGRBC) ऑटो-सैक्टर कम्पनियों सहित सभी व्यवसायों को उनके वैल्यू चेन में मौजूद काम की स्थितियों के लिये ज़िम्मेदार बनाती है.
- सम्पूर्ण देश में, खासकर ऑटो-सैक्टर केंद्रों में, कारखानों में काम की स्थितियाँ एक समान हैं, जहाँ बड़े पैमाने पर पावर प्रैस और इंजैक्शन मोल्डिंग मशीनों का इस्तेमाल होता है. इन्हीं दोनों मशीनों पर सबसे ज़्यादा दुर्घटनायें दर्ज की जाती हैं.

श्री संदीप सचदेवा, सहसंस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी, सेफ इन इंडिया, कहते हैं "उत्पादन में संलग्न अपने अदिकांश नागरिकों का ठीक से ध्यान रखे बिना भारत विकास कैसे कर सकता है? ऑटो-सैक्टर में लगभग दो करोड़ श्रमिक काम करते हैं, और दुर्घटनाओं की वर्तमान दर को देखते हुए पिछले कुछ दशकों में बहुत बड़ी संख्या में ये अपने हाथ और अंगुलियाँ खो चुके होंगे. ज़रूरत है साथ आने की और इनके हाथ बचाने की- ये वही हाथ हैं जो हमारे लिये कारें और दो-पहिया वाहन बनाते हैं."

रिपोर्ट के लिये अपनी प्रस्तावना में ऐरल एस डिसूज़ा, निदेशक, IIM अहमदाबाद कहते हैं "भारत के विनिर्माण क्षेत्र में एक प्रभावी सुरक्षा संस्कृति बनाने के उद्देश्य का समर्थन करना हम सभी की सामूहिक ज़िम्नेदारी है."

राजेश मेनन, महानिदेशक DG, SIAM सोसाइटी फॉर इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्यूफैक्चरर्स, कहते हैं "श्रमिकों की सुरक्षा और सेहत का उत्पादकता और अर्थव्यवस्था और सामाजिक विकास पर सीधा और सकारात्मक असर पड़ता है."

XLRI के प्रोफैसर श्याम सुंदर, जो एक प्रखयात श्रमिक विशेषज्ञ हैं, कहते हैं "यह रिपोर्ट बिल्कुल सही समय पर जारी की जा रही है क्योंकि मई-जून के दौरान 30 औद्दोगिक दुर्घटनाओं में कम से कम 75 श्रमिक मारे गये और सैकड़ों घायल हो गये, और इससे भी ज़्यादा क्योंकि OSH मुद्दों को कभी वह महत्व नहीं दिया जाता जिसकी ज़रूरत है."

श्री राजीव खंडेलवाल, संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी, आजीविका ब्यूरो, कहते हैं "सेफ इन इंडिया द्वारा जारी की गई दूसरी वार्षिक रिपोर्ट के निष्कर्ष न केवल अति महत्वपूर्ण तथ्य उजागर करते है, बल्कि ये भविष्य के लिये एक उत्कृष्ट रास्ता भी सुझाती है."

श्री अनिल सचदेव, संस्थापक, SOIL स्कूल ऑफ इंस्पायर्ड लीडरशिप, कहते हैं "प्रक्रियाओं का पुनर्निर्माण और संवेदनशीलता दुर्घटनाओं को पूरी तरह समाप्त करने के लिये ज़रूरी हैं. ये लक्ष्य हर हाल में हासिल करना ज़रूरी है."

वैबीनार के दौरान और बाद में और महत्वपूर्ण कथन उपलब्ध होंगे जहाँ इस विषय पर प्रकाश डालने के लिये हमारे साथ वक्ताओं का एक प्रतिष्ठित पैनल होगा.

हाथ बढ़ायें, हाथ बचायें
कार्यक्रम की संचालिका: मानवी सिन्हा NDTV और BBC की पूर्व उद्घोषिका हैं. उन्होंने मानवाधिकार और श्रमिक मुद्दों पर बहुत काम किया है.
पैनल:
श्री राजेश मेनन: महानिदेशक, SIAM सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्यूफैक्चरर्स
श्री विनी मेहता, महानिदेशक ACMA ऑटोमोटिव कम्पोनैंट मैन्यूफैक्चरर्स असोसियेशन ऑफ इंडिया
श्री राजीव खंडेलवाल: संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी आजीविका ब्यूरो
प्रोफैसर श्याम सुंदर: प्रोफैसर, मानव संसाधन प्रबंधन HRM, XLRI,जमशेदपुर
श्री अनिल सचदेव: संस्थापक, स्कूल ऑफ इंस्पायर्ड लीडरशिप SOIL
श्री संदीप सचदेवा, सहसंस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी, सेफ इन इंडिया फाउंडेशन